eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर के चिंतन की आधुनिक परिणति

[1]डॉ प्रीती,
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, दाऊ दयाल महिला पी.जी. कॉलेज फिरोजाबाद।

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र कबीर दास जी के चिंतन की आधुनिक परिणति के संबंध में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में बताया गया है किकबीर दास एक महान भक्ति कवि थे जिन्होंने अपनी कविताएँ और दोहे के माध्यम से समाज में सामाजिक और धार्मिक संदेश प्रस्तुत किए। उनकी शायरी से न केवल उनके समक्ष बातचीत का द्वार खुलता है, बल्कि उनके द्वारा दिए गए संदेशों का महत्व आज भी अद्वितीय है। कबीर दास का चिंतन आधुनिक युग में भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उस समय था। उनकी बातें और संदेश सामाजिक और धार्मिक मुद्दों पर उत्तरदायित्वपूर्ण और विचारों पर आधारित हैं, जो आज के समय में भी महत्वपूर्ण हैं। कबीर दास के चिंतन की आधुनिक परिणति में उनकी विचारधारा के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक मुद्दों पर आधारित उनके संदेशों का महत्व है। आज के समय में भी उनके संदेशों और विचारधारा को समझते हुए हम आधुनिक समाज में समाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता और भाईचारे के माध्यम से समृद्धि और सुख–शांति को बढ़ा सकते हैं।

बीज शब्द– कबीर, चिंतन, आधुनिक परिणति, उपसंहार।

Introduction

कबीर एक महान भक्ति काव्यकार और संत थे, जिनके विचार आज भी हमारे जीवन को प्रेरित करते हैं। उनके चिंतन की आधुनिक परिणति अर्थात विचारों की प्रासंगिकता आज के समय में भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे मानवता, समाज, और धर्म के मूल्यों पर चिंतन करते थे। कबीर के विचारों की प्रासंगिकता का पहला कारण उनकी समाजिक और धार्मिक सहिष्णुता है। उन्होंने एकता, समरसता, और प्रेम के सिद्धांतों को महत्वपूर्ण बताया था। उनके विचार से हमें यह सीख मिलती है कि सभी मानव एक ही परमात्मा के बच्चे हैं और हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। उनके विचार आज के समय में भी बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि हमारी समाज में सामाजिक और धार्मिक विभाजन की समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। उनके विचारों की प्रासंगिकता का दूसरा कारण है, उनकी व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से प्रभावित होने वाले अनेक लोगों की भलाई की भावना। कबीर के विचारों ने अनुयायियों के धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को मजबूत किया, जो आज के समय में भी लोगों को सहनशीलता, संघर्ष की ऊर्जा, और धैर्य देने में मदद करता है।

कबीर के विचारों में आत्म–समर्पण, निर्भीकता, और प्रेम की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने बताया कि सच्चे प्रेम में भगवान का अनुभव होता है और उसी प्रेम से हम समस्त संकटों को पार कर सकते हैं। आज के व्यस्त और तनावपूर्ण जीवन में, यह विचार हमें यहाँ तक ले जाते हैं कि हमें सत्य प्रेम और समर्पण की दिशा में जाना चाहिए।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर के विचारों की एक और महत्वपूर्ण प्रासंगिकता उनकी विरोधाभासी दृष्टि की है। वे ना केवल धर्म और समाज को बल्कि जाति, वर्ण, और सामाजिक विभेदों को भी खड़ा करते थे। उन्होंने बताया कि भगवान के सामने सभी लोग बराबर होते हैं और किसी का भी धर्म, जाति, और सामाजिक स्थिति से कोई संबंध नहीं होता। उनके विचार आज के समय में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि हमारी समाज में विभेद और असमानता की समस्याएँ अभी भी बहुत उच्च हैं।

कबीर के अन्य विचारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, संज्ञानात्मक विकास, और जीवन में उदारता के भी दृष्टिकोण दिए गए हैं, जो आज के समय में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनके विचार हमें बताते हैं कि हमें स्वतंत्र रूप से सोचने की और अपने उद्देश्य की दिशा में बढ़ने की आवश्यकता है। उनके विचारों की प्रासंगिकता उस समय से लेकर आज के समय तक बनी रही है और निरंतर हमारे जीवन को प्रेरित करती रहेगी।

कबीर के विचारों की प्रासंगिकता का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि उनके विचार हमें संघर्ष और परिवर्तन के लिए प्रेरित करते हैं। कबीर ने अपने कविता और दोहों में जीवन के सच्चाई को सरल शब्दों में व्यक्त किया था, जिससे उनके विचार आम लोगों तक पहुंच सके।उनके विचार भी देश–विदेश, शहर–गाँव, और विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों के बीच सहजता का संदेश देते हैं। कबीर के विचारों के लिए उनके यशस्वी दिन और उनकी कविताएं आज भी हमारे जीवन के अनेक पहलुओं में मार्गदर्शक हैं और इसलिए उनकी वाणी की प्रासंगिकता को हम हर समय महसूस करते हैं।

कबीर दास के चिंतन की आधुनिक परिणिति

कबीर दास के चिंतन की आधुनिक परिणिति से तात्पर्य शायद उनके विचारों और सिद्धांतों को आज के समय में अपनाना है। कबीर दास की बातें जीवन के मूल्यों, सत्य की खोज, और मानवता की सच्ची पहचान पर ध्यान केंद्रित करती हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए विचार और दोहे आज के समय में भी मानवता को सच्चाई और साधारणता की ओर बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर

पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।

अर्थ– खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने का क्या लाभ, जो ना ठीक से किसी को छाँव दे पाता है। और न ही उसके फल सुलभ होते हैं।

कबीर दास का चिंतन विशेष रूप से सामाजिक और धार्मिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता था। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए वैचारिक सिद्धांतों में सामाजिक न्याय, संगठित धर्म से मुक्ति, सर्वसम्मत भावना और भगवान की साकार और निराकार स्वरूप के प्रति विशेष ध्यान दिया गया था। वे विरले हृदय के धरातल पर गांधीजी की उपदेशक हुई थे। उनका चिंतन और संदेश आज भी मानवता के लिए मौलिकता और सच्चाई के संदेश के रूप में अभिव्यक्त होता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

अर्थ– बड़ी–बड़ी पुस्तकें पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुंच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

कबीर के चिंतन की आधुनिक परिणिति में उनके मूल्यों को समझना और उन्हें आम जीवन में अपनाना मानवता के सत्य और साधारणता को बढ़ावा देता है। उनके विचारों में संतुलन, सहसा और संगठन के मूल्य भी समाहित हैं, जो आज के भागीदार समाज के लिए उपयुक्त हैं। इन्हें आधुनिक परिणामों में शामिल करने के लिए हमें उनकी सार्थकता को महसूस करना चाहिए और उसे हमारे जीवन में उतारना चाहिए।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर,

कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।

अर्थ– कोई व्यक्ति लंबे समय तक हाथ में लेकर मोती की माला तो घुमाता है, पर उसके मन का भाव नहीं बदलता, उसके मन की हलचल शांत नहीं होती। कबीर की ऐसे व्यक्ति को सलाह है कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन के मोतियों को बदलो या फेरो।

कबीर के चिंतन की आधुनिक परिणिति का एक पहलू यह भी है कि उनके द्वारा स्वदेशी और समाज के विकास की बात करते हुए, वे जनसंख्या नियंत्रण के महत्व को भी समझाते हैं। आज के समय में जनसंख्या नियंत्रण और सुस्त जनसंख्या वृद्धि के मसालों के सम्बंध में उनकी चिंता और समझ को आधुनिक परिणामों में शामिल करना चाहिए।

कबीर के चिंतन की आधुनिक परिणिति में समाज में समानता, समृद्धि, स्वतंत्रता और समृद्धि के जीवन शैली को प्रोत्साहित करना भी शामिल है। वे समाज में जाति, धर्म और सामाजिक परंपराओं के विरुद्ध थे और मानवता के साथी के रूप में सच्चाई और सहानुभूति की बात करते थे। इस प्रकार, उनके विचार आज के समय में भी समाज में न्याय, भाईचारा और सच्चाई की राह पर आगे बढ़ने की दिशा में सुनिश्चित रूप से उपयुक्त हैं।

जब मैं था तब हरी नहीं, अब हरी है मैं नाही

सब अँधियारा मिट गया, दीपक देखा माही।

अर्थ– जब मैं अपने अहंकार में डूबा था, तब प्रभु को न देख पाता था। लेकिन जब गुरु ने ज्ञान का दीपक मेरे भीतर प्रकाशित किया तब अज्ञान का सब अंधकार मिट गया। ज्ञान की ज्योति से अहंकार जाता रहा और ज्ञान के आलोक में प्रभु को पाया।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर के चिंतन की आधुनिक परिणिति में मानवता के साथी के रूप में उनकी सहानुभूति, परोपकारिता और सच्चाई का संदेश भी शामिल है। उनके विचार आज के समय में भी समाज में सहायता, परोपकार और प्रेम की महत्वपूर्णता को समझाने के लिए उपयुक्त हैं।

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।

जो सुख में सुमिरन करें तो दुःख कहे को होय ।।

कबीर के चिंतन की आधुनिक परिणिति में आध्यात्मिकता और साधना की महत्वपूर्णता को प्रमोट करने की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। वे आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग को प्राथमिकता देते थे और इसी दरिया में हमारे आधुनिक जीवन के माध्यम से भी हमें उन विचारों को बढ़ावा देने की जरूरत है।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान,

मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।

अर्थ– सज्जन की जाति न पूछ कर उसके ज्ञान को समझना चाहिए। तलवार का मूल्य होता है न कि उसकी मयान का उसे ढकने वाले खोल का।

कबीर के चिंतन की आधुनिक परिणिति में सत्य की खोज, आत्म–समर्पण और साधारणता के मूल्य भी समाहित हैं, जो आज के भागीदार समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जीवन में मरना भला, जो मरि जानै कोय।

मरना पहिले जो मरै, अजय अमर सो होय।।

अर्थ– जीते जी ही मरना अच्छा है, यदि कोई मरना जाने तो। मरने के पहले ही जो मर लेता है, वह अजर–अमर हो जाता है। शरीर रहते–रहते जिसके समस्त अहंकार समाप्त हो गए, वे विजयी ही जीवन मुक्त होते हैं।

इस प्रकार, कबीर दास के चिंतन की आधुनिक परिणिति में उनके विचारों को आज के समय के संदर्भ में समझना, उन्हें आम जीवन में उतारना, और समाज में समानता, सच्चाई, सहानुभूति, आत्म–समर्पण, और आध्यात्मिकता की महत्वपूर्णता को समझने में हमारी मदद कर सकता है। इसके अलावा, हमें अपने सुस्त जनसंख्या वृद्धि के मसालों के सम्बंध में भी उनके विचारों को समझना चाहिए और उन्हें अपनाना चाहिए। यह समाज में स्वतंत्रता, समृद्धि, समानता, सच्चाई, सहायता, आध्यात्मिकता, संगठन और गंदगी के खिलाफ लड़ाई के प्रति हमारी प्रेरणा का स्रोत भी बना सकता है।

कबीर के चिंतन की आधुनिक परिणिति का अध्ययन और उनके विचारों को आधुनिक समाज में समाज में समानता, सच्चाई, सहानुभूति, साधारणता, और स्थतिकी के मूल्यों को प्रमोट करने के लिए हमारे सामाजिक सिद्धांतों को स्थापित करने में मदद कर सकता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

उपसंहार–

कली के पुष्प बनने की प्रक्रिया मात्र इतनी सी है कि वह खिल जाती है तब उसके अंदर निहित महक स्वत ही प्रकट होकर चारों ओर बिखर जाती है कबीर दास जी वास्तव में ऐसे ही पुष्प की भांति है जिनकी सुगंध कल भी अपने परिवेश को सुगंधित कर रही थी और आज भी सुगंधित कर रही है और कल भी करती रहेगी।कबीर एक निरपेक्ष और अनंत कालों से कालजयी साहित्यकार हैं। उनके विचारों को किसी समय, क्षेत्र, संप्रदाय, समाज तथा अध्यात्म से बांधकर नहीं देखा जा सकता है। उनके विचार वह विचार हैं जो कल भी दिशा भ्रमित समाज को दिशा दे रहे थे और आज भी दे रहे हैं और आगे भी देश और समाज का पथ प्रदर्शक का काम करते रहेंगे। कबीर के साहित्य को एक बहुत ही व्यापक परिपेक्ष में देखने की जरूरत है कबीर नई आधुनिक चेतना, पाखंडविहीन समाज, संतोषी, मानवता और संप्रदाय, जाति विहीन समाज के पक्षधर हैं। वह हमारे उत्थानशील भारत के नायक के रूप में हमेशा विद्यमान रहेंगे। कबीर दास जी ने अपने जीवन के अंतिम समय में मगहर आकर समाज को एक बहुत ही बड़ा संदेश दिया जो एक महान नायक ही समाज के लिए कर सकता है।

सन्दर्भ–सूची–

1. दास, श्यामसुन्दर कबीर ग्रन्थावली, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी,1938, प्रष्ठ, 65,112
2. सोरेन, चम्पावती, कबीर के चिंतन पर अद्वैतवाद का प्रभाव,परिक्रमा प्रकाशन,2016
3. आनन्द, नीरज, कबीर चिंतन, डायमंड पॉकेट बुक, दिल्ली, 2017
4. थामस, ,एम. डी.,कबीर और ईशाई चिंतन, राधाकृष्ा प्रकाशन प्रा.लि.,नई दिल्ली, 2008,प्रष्ठ,8
5. स्नातक, विजयेन्द्र, कबीर, राधाकृष्ा प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, 2008,प्रष्ठ संख्या 12
6. पूजा, कबीर समाज सुधारक के रूप में, जर्नल ऑफ ,डवांसेज ,ड स्कोलर्ली रिसर्चज इन अलाइड ,जुकेशन, मल्टीडिसिप्लिनरी अकेडमिक रिसर्च
7- https://www.amarujala.com
8- https://www.jagran.com